



SHRI V. P. APPUKUTTAN PODUVAL

Shri V. P. Appukuttan Poduval has been a pioneer in the Gandhian movement of self-reliance through Khadi and Village industries propagation and promotion. He had actively participated in freedom struggle, movements against untouchability and social discrimination.

2. Born on 9th October, 1923, Shri Poduval had his schooling in the Board High School, Payyanur, Malabar district of then Madras province. He completed SSLC in 1942 and later on did his Masters, MA in Political Science, from Mysore University. Inspired by Mahatma Gandhi, whom Shri Poduval was fortunate to meet during schooling, he jumped into the freedom struggle and participated actively in the movement. He was jailed due to his activities in the movement. He felt the Khadi propagation as a means for alleviation of poverty, upliftment of the poor, a means for self-employment and show of solidarity of Indians against the British rule, and dedicated himself for the same. The self-reliance and empowerment of India was envisioned in the Khadi movement at that period of time and he firmly believed the same.

3. Shri Poduval joined the Akhil Bharat Charka Sangh in 1944, which later merged into the Khadi and Village industries Commission. He had travelled through the length and breadth of the country, mainly headquartered at Lucknow, Madras, Bombay and Trivandrum in the process of propagation of Khadi movement and Gandhian philosophy, for about 40 years. He also had to contact and interact with the people of dacoit infected areas of Chambal region of Madhya Pradesh where Khadi units had been set up. Many such dacoits of that area had surrendered in front of Vinobaji, at the time of Bhoodan movement. He had actively participated in the Bhoodan movement as well.

4. In 1989, Shri Poduval co-founded an institution for Sanskrit studies, the Bharatheeya Sanskrit Mahavidyalaya at Payyannur and was heading it for fifteen years, training students. It is affiliated to the Rashtreeya Sanskrit Sanstan, New Delhi. He is also associated with the Sarvodaya Mandal, Chinmaya Mission, Ananda Theertha Ashram etc. among many others, working for the emancipation of the society in general.

5. Shri Poduval had contributed many articles in publications on the subjects of Gandhian studies, Spiritualism, Bhagavat Gita etc. He had also published two books in Malayalam titled “Spiritualism in Gandhian Ideology”, and “Bhagavad Gita -Science of Self unfoldment”.

6. Shri Poduval is the recipient of many awards, prominent among them are Gandhi Smruthi Samman from Central University, Periya 2003; Citation for Gandhian Literature from Calicut University 2014; Gandhi Smruthi Samman of Vishwa Sanskrit Prathistan 2018; G . Kumara Pillai Award in recognition of overall contribution to the society 2013 and Sahrudaya Thilakam Award for Sanskrit by Vishwa Sanskrit Prathistan, Kerala 2003.



श्री वी. पी. अप्पुकुट्टन पोतुवाल

श्री वी. पी. अप्पुकुट्टन पोतुवाल खादी और ग्रामोद्योगों के प्रचार—प्रसार और संवर्धन के माध्यम से आत्मनिर्भरता के गांधीवादी आंदोलन में अग्रणी रहे हैं। उन्होंने स्वतंत्रता संग्राम, अस्पृश्यता और सामाजिक भेदभाव के खिलाफ आंदोलनों में सक्रिय रूप से भाग लिया था।

2. 9 अक्टूबर, 1923 को जन्मे, श्री पोतुवाल ने तत्कालीन मद्रास प्रांत के मालाबार जिले के बोर्ड हाई स्कूल, पय्यानूर से स्कूली शिक्षा पाई। उन्होंने 1942 में एसएसएलसी पूरा किया और बाद में मैसूर विश्वविद्यालय से राजनीति विज्ञान में एमए किया। महात्मा गांधी से प्रेरित होकर, जिनसे वह स्कूली शिक्षा के दौरान मिले थे, स्वतंत्रता संग्राम में कूद गए और इस आंदोलन में सक्रिय रूप से भाग लिया। आंदोलन में उनकी गतिविधियों के कारण उन्हें जेल जाना पड़ा। उन्होंने खादी प्रचार को गरीबी उन्मूलन, गरीबों के उत्थान, स्वरोजगार का साधन और ब्रिटिश शासन के खिलाफ भारतीयों की एकजुटता दिखाने का साधन माना और उसके लिए खुद को समर्पित कर दिया। उस समय खादी आंदोलन में भारत की आत्मनिर्भरता और सशक्तीकरण की कल्पना की गई थी जिसमें उनका दृढ़ विश्वास था।

3. श्री पोतुवाल 1944 में अखिल भारत चरखा संघ में शामिल हुए, जिसका बाद में खादी और ग्रामोद्योग आयोग में विलय हो गया। उन्होंने करीब 40 वर्ष तक खादी आंदोलन और गांधीवादी दर्शन के प्रचार—प्रसार के लिए मुख्य रूप से लखनऊ, मद्रास, बॉम्बे और त्रिवेंद्रम में रहते हुए देश भर की यात्रा की। उन्हें मध्य प्रदेश के चंबल इलाके के डकैत प्रभावित क्षेत्रों के लोगों से भी संपर्क और बातचीत करना पड़ा, जहां खादी इकाइयां स्थापित की गई थीं। भूदान आंदोलन के समय उस इलाके के ऐसे कई डकैतों ने विनोबाजी के सामने आत्मसमर्पण कर दिया था। उन्होंने भूदान आंदोलन में भी सक्रिय रूप से भाग लिया था।

4. 1989 में, श्री पोतुवाल ने पय्यानूर में संस्कृत अध्ययन के लिए एक संस्थान, भारतीय संस्कृत महाविद्यालय की सह—स्थापना की और छात्रों को प्रशिक्षण देते हुए पंद्रह वर्ष तक उसके प्रमुख रहे। यह राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान, नई दिल्ली से संबद्ध है। वह समाज की मुक्ति के लिए काम करते हुए सर्वोदय मंडल, चिन्मय मिशन, आनंद तीर्थ आश्रम आदि से भी जुड़े हुए हैं।

5. श्री पोतुवाल ने गांधीवादी अध्ययन, आध्यात्मवाद, भगवद्गीता आदि विषयों पर पत्र—पत्रिकाओं में कई लेख लिखे। उन्होंने मलयालम में “गांधीवादी विचारधारा में आध्यात्मिकता” और “भगवद्गीता—आत्म प्रकटीकरण का विज्ञान” शीर्षक से दो पुस्तकें भी प्रकाशित कीं।

6. श्री पोतुवाल को कई पुरस्कार मिल चुके हैं, जिनमें से 2003 में केंद्रीय विश्वविद्यालय, पेरिया से गांधी स्मृति सम्मान; 2014 में कालीकट विश्वविद्यालय से गांधीवादी साहित्य के लिए प्रशस्ति पत्र; 2018 में विश्व संस्कृत प्रतिष्ठान 2018 का गांधी स्मृति सम्मान; 2013 में समाज में समग्र रूप से योगदान के लिए जी. कुमार पिल्लै पुरस्कार और विश्व संस्कृत प्रतिष्ठान, केरल द्वारा 2003 में संस्कृत के लिए सहृदय तिलकम पुरस्कार प्रमुख हैं।